www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग चेतना साहित्य-१२७

पर्व त्यौहार एक सामाजिक संस्कार

युग ऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

यह पुस्तिका स्वयं पढ़ें, परिवार में सबको पढ़ाएँ ।
एक सप्ताह बाद किसी अन्य पात्र व्यक्ति को दे दें ।

सौजन्य से :

यह पत्रिका/पुस्तक
युग निर्माण योजना मथुरा
की संपत्ति है
पृष्ठ संख्या..... से.....

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मीय अनुरोध

परमपूज्य गुरुदेव की आकांक्षानुसार उनके उत्कृष्ट चिंतन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न विषयों पर अति अल्प मूल्य वाली पुस्तकों का **युग चेतना साहित्य** प्रकाशित किया जा रहा है । न्यूनतम १०० पुस्तिका मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजना चाहिए । शक्तिपीठें एक साथ अधिक साहित्य मँगाकर स्थानीय कार्यकर्ताओं को उपलब्ध करा सकती हैं । उदार दानी भामाशाहों को अपने धन का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ में करके पुस्तिकाएँ समाज में वितरित करनी चाहिए । इसी प्रकार के क्रांतिकारी चिंतन की पाठ्यसामग्री के स्वाध्याय हेतु 'युग निर्माण योजना' मासिक पत्रिका (वार्षिक शुल्क ३०) रुपया) के सदस्य बनें ।

-लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना, मथुरा

मूल्य : ३० पैसे

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्व त्यौहार एक सामाजिक संस्कार

व्यक्तिगत दृष्टिकोण का परिष्कार करने के लिए जिस प्रकार पूजा–उपासना, पारिवारिक रीति–नीति को उत्कृष्ट बनाए रखने के लिए संस्कार प्रक्रिया है, ठीक उसी प्रकार समाज को समुन्नत और सुविकसित बनाने के लिए सामूहिकता, ईमानदारी, कर्तव्य–निष्ठा, नागरिकता, परमार्थ–परायणता, देशभक्ति, लोकमंगल जैसी सत्प्रवृत्तियाँ विकसित करनी पड़ती हैं । उन्हें सुस्थिर रखना होता है । यह भी बार–बार स्मरण दिलाते रहने वाला प्रसंग है । इसी प्रयोजन के लिए देव संस्कृति में पर्व–त्यौहार मनाए जाते हैं । इन्हें सामाजिक संस्कार प्रक्रिया ही समझना चाहिए । **साधना से व्यक्तित्व, संस्कारों से परिवार और पर्वों से समाज का स्तर ऊँचा बनाने की पद्धति दूरदर्शिता पूर्ण है, इसे हजारों लाखों वर्षों तक आजमाया जाता रहा है ।**

पर्वों की रचना इसी दृष्टि से हुई कि प्राचीन काल की महान् घटनाओं एवं महान् प्रेरणाओं का प्रकाश जनमानस में भावनात्मक एवं सामूहिक वातावरण के साथ उत्पन्न किया जाए । इसके लिए कितने ही

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
पर्व–त्यौहार प्रचलित हैं । उनमें से देश, काल, पात्र के अनुसार जब जहाँ जिसको प्रधानता देने की आवश्यकता समझी जाती है, उन्हें प्रधान और शेष को गौण मान लिया जाता है । मुख्य रूप से इनमें से **दस पर्व** प्रमुख रूप से मनाए जाने योग्य हैं । मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरणशील प्राणी है । दूसरों को कोई शुभ काम करता देखकर उसके मन में वैसा ही काम करने की इच्छा स्वतः उत्पन्न होती है । यही मूल कारण था कि सामूहिक आयोजनों के रूप में पर्वोत्सवों का प्रचलन किया गया ।

लोकमानस के परिष्कार हेतु, सत्प्रवृत्ति विस्तार हेतु, श्रेष्ठ परंपरा स्थापना हेतु ही पर्वों का विधान देव संस्कृति में रखा गया है । इनसे देव शक्तियों का पूजन, जन साधारण के पारस्परिक सम्मिलन एवं लोक शिक्षण का त्रिविध प्रयोजन पूरा होता है । यह व्यवस्था इतनी सुनियोजित एवं वैज्ञानिक है कि इसकी उपादेयता से इंकार नहीं किया जा सकता । समाज के ढाँचे को सुव्यवस्थित बनाए रखने में पर्वों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । हमारे यहाँ होली, दीपावली, दशहरा और गंगा स्नान आदि के जो

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
त्यौहार और पर्व नियत किए गए हैं, उनका विशेष उद्देश्य यही है कि लोग परस्पर प्रेमपूर्वक मिलें और सामूहिकता की भावना को सुदृढ़ बनाएँ ।

धर्मधारणा को हर किसी के गले में मात्र उपदेशों से नहीं उतारा जा सकता । व्यक्ति को अध्यात्म का मर्म समझाने, सही शिक्षा देने और सन्मार्ग पर चलाने का ऋषि प्रणीत मार्ग है, धार्मिक कथाओं के कथन-श्रवण द्वारा सत्संग एवं पर्वों पर सोद्देश्य मनोरंजन । युग धर्म के अनुरूप इन पर्वों में से दस का निर्वाह बन पड़े तो उत्तम है । उन प्रमुख दसों के नाम और उद्देश्य इस प्रकार हैं ।

१-दीपावली-लक्ष्मी के उपार्जन और उपयोग की मर्यादाओं का बोध । गोसंवर्धन की प्रमुखता । महावीर, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानंद की पुण्य स्मृतियाँ भी मनाई जाती हैं ।

२-गीता जयंती-मार्गशीर्ष सुदी ११ को । गीता के कर्मयोग का समारोह पूर्वक प्रचार-प्रसार । जीवन में कर्मनिष्ठा को स्थान देने का संकल्प ।

३-वसंत पंचमी-माघ सुदी पंचमी । वसंतोत्सव भगवती सरस्वती का जन्म दिन । सदैव उल्लसित

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
हल्की–फुल्की मनःस्थिति बनाए रखना । साहित्य, संगीत एवं कला को सही दिशा–धारा देना ।

४–शिवरात्रि–भगवान् शिव के प्रतीक में जिन सत्प्रवृत्तियों की प्रेरणा का समावेश है, उनका रहस्य समझना–समझाना । नशा–निषेध का, मनः संस्थान पर छाई दुष्प्रवृत्तियों को मिटा डालने का दृढ़ संकल्प ।

५–होली–पतझड़ के कूड़े–करकट को जलाना अर्थात् अंतः की मलीनता को धो डालना । नवान्न का वार्षिक यज्ञ । प्रह्लाद कथा का विशेष रूप से स्मरण । उल्लास उत्साह की उमंगभरी अभिव्यक्ति ।

६–गंगा दशहरा–गायत्री जयंती । जेष्ठ शुक्ल दशमी भागीरथ के उच्च उद्देश्य एवं तप की सफलता से प्रेरणा । आद्य शक्ति गायत्री की प्रेरणाओं की जानकारी । ऐसे ही दृढ़ संकल्पों के लिए सदैव उद्यत रहना ।

७–व्यास पूर्णिमा–गुरुपूर्णिमा । यह अनुशासन पर्व है, स्वाध्याय और सत्संग की व्यवस्था का भी । गुरु तत्व के माध्यम से श्रद्धा भावना के एक मार्गदर्शक प्रतीक की स्थापना इस पर्व पर की जाती है ।

८–श्रावणी–रक्षा बंधन–बहिन–भाई की पवित्र

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
दृष्टि । बन पड़े पापों का प्रायश्चित हेमाद्रि संकल्प । यज्ञोपवीत का नवधारण । उसके प्रयोजन का पुनः स्मरण । ऋषि कल्प पुरोहितों से व्रतशीलता में बँधना ।

९–पितृ अमावस्या–आश्विन वदी अमावस्या, अपने पूर्वजों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण । अभिव्यक्ति के लिए श्राद्ध–तर्पण । अतीत के महामानवों को श्रद्धांजलि अर्पण ।

१०–विजयादशमी–स्वाध्याय, शस्त्र एवं शक्ति संगठन की आवश्यकता का स्मरण, लंका पर राम विजय की प्रसन्नता ।

आश्विन और चैत्र नवरात्रियाँ भी साधना पर्व के रूप में प्रख्यात हैं । इनमें आद्य शक्ति गायत्री अनुष्ठान और ज्ञान यज्ञ के सुनियोजित आयोजन होने चाहिए ।

वसंत पंचमी शिक्षा, साक्षरता, विद्या और विनय का पर्व है । कला, विविध गुण, विद्या की साधना को बढ़ाने, उन्हें प्रोत्साहित करने का पर्व है– वसंत पंचमी । मनुष्यों में सांसारिक, व्यक्त जीवन का सौन्दर्य, मधुरता, उसकी सुव्यवस्था में सब विद्या, शिक्षा गुणों के ऊपर ही निर्भर करते हैं । अशिक्षित, गुणहीन, बलहीन व्यक्ति को हमारे यहाँ पशुतुल्य माना

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
गया है । ''संगीत साहित्यकलाविहीनः साक्षात् पशु पुच्छविषाणहीनः ।'' इसलिए हम अपने जीवन को इस पशुता से ऊपर उठाकर विद्या–सम्पन्न, गुण–संपन्न, गुणवान जीवन बिताएँ, वसंत पंचमी इसी की प्रेरणा का त्यौहार है ।

जब समुद्र मंथन हो रहा था और अनेक प्रकार की उपयोगी वस्तुओं के निकलने के पश्चात् जब हलाहल विष निकला, तो सब देवता घबरा गए कि यदि यह विष संसार में फैल गया, तो समस्त संसार इसके प्रभाव से संतप्त हो जाएगा । महादेव कहलाने वाले शंकर ने अपने शरीर की परवाह न करते हुए उस हलाहल विष का पान करने का निश्चय किया । शिव चरित्र **महाशिवरात्रि** का पर्व हमको लोभ, मोह लालसा के स्थान पर त्याग, अपरिग्रह और परहित साधना की प्रेरणा देता, उपदेश करता है । यह व्रत फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को बड़े धूमधाम से शिवजी की पूजा अर्चना करते हुए मनाया जाता है ।

होलिका पर्व यह राष्ट्रीय चेतना के जागरण का पर्व है । जहाँ भेद है, वहाँ समस्त साधन होते हुए भी क्लेश और अशक्तता ही रहेगी । जिनमें भ्रातृत्व–

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
सहकार है, वे अल्प साधनों में भी प्रसन्न और अजेय रहेंगे । इसलिए इसे समता का पर्व भी मानते हैं । कार्य विभाजन के लिए किये गये चारों वर्णों में कोई दूसरे को हीन न माने, इसलिए चार प्रमुख पर्वों पर चारों वर्णों को प्रमुख महत्व देने की परंपरा रखी गई है । होली पर्व में कर्म से निर्धारित शूद्र वर्ग को प्रधान महत्व देकर समता के सिद्धाँत को चरितार्थ किया जाता रहा है ।

गायत्री को वेद माता, ज्ञान गंगोत्री, संस्कृति की जननी एवं आत्मबल की अधिष्ठात्री कहा जाता है । इसी ज्ञान विज्ञान की देवी गायत्री का जन्म दिन है **गायत्री जयंती** । इसी दिन भगवती गंगा स्वर्ग से धरती पर अवतरित हुई । जिस प्रकार स्थूल गंगा भूमि को सींचती, प्राणियों की तृष्णा मिटाती, मलीनता हरती और शांति देती है, वही सब विशेषताएँ अध्यात्म क्षेत्र में गायत्री रूपी ज्ञान गंगा की है ।

श्रावणी पर्व अपने ज्ञान को कर्म की शक्ति को सृजन की प्रेरणा देने वाला पर्व है । हमारा ज्ञान वाणी से नहीं आचरण से व्यक्त हो । हमारी शक्ति किसी को दबाने, झुकाने या निरर्थक कार्यों में नहीं, सृजन में

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
लगे । श्रावणी पर्व में प्रधान रूप से ध्यान देने योग्य तथ्य हैं । शिखा, परिष्कृत विचारणा, आदर्शवादी आस्था, उत्कृष्ट जीवन नीति का प्रतीक है । जिस सिर पर यह लहराए, उस मस्तिष्क के संबंध में यह जानना चाहिए कि इस मस्तिष्क में आदर्शवादी आस्थाओं का निवास है ।

यज्ञोपवीत उन आदर्शों को बहिरंग जीवन में भी क्रियान्वित करने का व्रत–बंध है । इसके एक–एक धागे में अगणित प्रेरणाएँ सन्निहित हैं । श्रावणी पर्व पर शिखा सिंचन और उपवीत नवीनीकरण के जो कार्य संपन्न किए जाते हैं, उनका यही अर्थ है कि हम अपने आदर्शों को भूले नहीं हैं । शिखा सिंचन और उपवीत नवीनीकरण् ज्ञान और कर्म दोनों को परिष्कृत बनाए रखने का संकल्प पुनः–पुनः दुहराया जाता है ।

हेमाद्रि संकल्प प्रायश्चित प्रक्रिया के पीछे यही भावना है कि पिछले दिनों हमसे जो अवांछनीयताएँ होती रहीं, उन्हें अब दूर करने का संकल्प लिया जा रहा है । अवाँछनीयताएँ दूर करने के रूप में पिछले दिनों हुई त्रुटियों का छूटना भी आवश्यक है । अतः श्रावणी पर्व पिछले वर्ष के पुनरावलोकन, आत्म–निरीक्षण

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
का पर्व भी है । यह पर्व विभिन्न क्रर्मकांडों के माध्य
से हमें अपने आदर्शों को ज्ञान या विचार को जीवन
उतारने की व्यावहारिक प्रेरणा देता है ।

नारी का दमन, यौन अत्याचार कहीं कोई क
न पाए, इसके लिए पवित्र हृदय वाले नरपुंगवों का
वीरों का आह्वान इस दिन नारी करती है । वह कहत
है–जिसकी साँसें और पसीना परहित में बह जाए
वही वीर मेरी राखी बँधवाने हाथ बढ़ाए ।

विजयादशमी पर्व वास्तव में जनता में राष्ट्री
भावना के प्रसार का त्यौहार है और वर्तमान समय
इसका महत्व अतीतकाल की अपेक्षा कहीं अधिक है
इसलिए इस समय विजयादशमी का उद्देश्य यही हो
चाहिए कि देश वासियों में राष्ट्र रक्षा की भावना भल
प्रकार जड़ जमाले और वे राष्ट्र–हित के विरोध
कार्यों से सदैव दूर रहें तथा राष्ट्र–विरोधी तत्वों क
डटकर मुकाबला करें, उनके पैर टिकने न दें । रा
की एकता, अखंडता और स्वतंत्रता की प्राणपण
रक्षा का व्रत लें ।

दीपावली–लक्ष्मी का पर्व माना गया है
दीपावली पर हम अपनी आर्थिक स्थिति का लेखा-

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
जोखा लेते हैं । यह आर्थिक क्षेत्र में अपनी बुराइयों को छोड़कर अच्छाइयाँ ग्रहण करने का पर्व है । अर्थ अर्थात् लक्ष्मी, जीवन साधना का, विकास की ओर बढ़ने का सहारा है, लेकिन ठीक उसी तरह जैसे माँ का दूध । हम लक्ष्मी को माँ समझकर उसे अपने जीवन को विकसित, सामर्थ्यवान बनाने के लिए उपयोग करें, न कि भोग विलास तथा ऐश आराम के लिए । इसलिए माँ लक्ष्मी के रूप में अर्थ की पूजा करना दीपावली का एक विशेष कार्यक्रम है । आवश्यकतानुसार खर्च करना, उपयोगी कार्यों में लगाना, नीति, श्रम तथा न्याय से धनोपार्जन करना, बजट बनाकर उसकी क्षमता के अनुसार खर्च करना, आर्थिक क्षेत्र में संतुलन तथा व्यवस्था कायम रखना, ये सब दीपावली पर्व के संदेश हैं ।

गणेश पूजन–गौरी पूजन–गौ द्रव्य पूजन इस पर्व की विशेषताएँ हैं । इनसे तात्पर्य है कि धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का अर्थात् अर्थ का सद्बुद्धि, ज्ञान, प्रकाश और पारमार्थिक कार्यों से विरोध नहीं होना चाहिए, वरन् अर्थ का उपयोग इनके लिए हो और अर्थोपार्जन भी इन्हीं से प्रेरित हो ।

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नवरात्रि पर्व वर्ष भर में दो बार आता है । १–चैत्र शुक्ल १ से ९ तक । चैत्र नवरात्रि जिस दिन प्रारंभ होती है, उसी दिन विक्रमी संवत् का नया वर्ष प्रारंभ होता है । विक्रमादित्य राजा होने के साथ ही जनहित लोकमंगल के लिए समर्पित साधक भी थे । चैत्र नवरात्रि का प्रथम दिन नवीन संवत्सर तथा समापन दिवस भगवान् राम का जन्म दिन रामनवमी होता है ।

२–दूसरी नवरात्रि आश्विन शुक्ल १ से ९ तक पड़ती है । इससे लगा हुआ विजयादशमी पर्व आता है । ऋतुओं के संधिकाल इन्हीं पर्वों पर पड़ते हैं । संधिकाल को उपासना की दृष्टि से सर्वाधिक महत्व दिया गया है । प्रातः और सायं, ब्रह्म मुहूर्त एवं गोधूलि वेला, दिन और रात्रि के संधि काल हैं । इन्हें उपासना के लिए उपयुक्त माना गया है । इसी प्रकार ऋतु संधिकाल के नौ–नौ दिन दोनों नवरात्रियों में विशिष्ट रूप से साधना–अनुष्ठानों के लिए महत्वपूर्ण माने गए हैं ।

सभी पर्व–त्यौहार सामूहिक लोक शिक्षण और उत्साह–उल्लास के अभिवर्धन हेतु विकसित हुए हैं । इन सभी को सामूहिक समारोहों के रूप में मनाया

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाना चाहिए । कर्मकांडों की पूर्ति अकेले सामूहिक गायत्री यज्ञ अथवा वातावरण परिशोधन हेतु किए गए अपने मतों के अनुसार संकल्पित धर्मानुष्ठानो से हो सकती है ।

उन्हें सार्वजनिक धर्म सम्मेलनो के रूप में मनाया जाए । अधिकाधिक जन समुदाय एकत्रित किया जाए । सामूहिक गायत्री यज्ञ से कर्मकांडों की पूर्ति होती है । संगीत और प्रवचन की व्यवस्था रखी जाए । प्रवचनों में पर्व के निर्धारित उद्देश्यों पर प्रकाश डाला जाए और उन्हें कार्यान्वित करने का सामयिक सुझाव दिया जाए । जहाँ संभव हो प्रसाद वितरण एवं अमृताशन के प्रीति भोज का प्रबंध किया जाए । समाज को सुव्यवस्थित करने के लिए पर्व समारोहों की बड़ी उपयोगिता है ।

आशा है आपको यह पुस्तिका अच्छी लगी होगी । इस पुस्तिका को एक सप्ताह से अधिक अपने पास रखना ज्ञान यज्ञ में विघ्न डालना है । आप भी कुछ पुस्तकें समाज में वितरित करें ।

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

(१) **श्रीराम झोला पुस्तकालय**–समयदान के अंतर्गत परिजन नित्यप्रति न्यूनतम एक घर में साहित्य बदलने का कार्य करें । पूज्यवर के चिंतन को घर–घर पहुँचाएँ ।

(२) **माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय**–नियमित दैनिक अंशदान (न्यूनतम ५० पैसा प्रतिदिन) ज्ञानयज्ञ के लिए निकालकर १५) रुपए की युग चेतना साहित्य की ५० पॉकेट बुक्स प्रतिमाह पढ़ने के लिए बाँटें ।

(३) **गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना**–पुरानी पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप लगाकर समाज में वितरित कर दें । स्लिप गायत्री तपोभूमि, मथुरा से मँगा सकते हैं ।

(४) **युग चेतना साहित्य वितरण योजना**–३० पैसा मूल्य वाली १६ पेजी पॉकेट बुक्स न्यूनतम ९०० मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजकर मँगाएँ और वितरित करें ।

संपर्क सूत्र–**विचार क्रांति अभियान**
युग निर्माण योजना, मथुरा–२८१००३

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग ऋषि चिंतन

विचारों की विचारों से काट, आस्थाओं का परिष्कार और उल्टे को उलट कर सीधा करना ही विचार क्रांति का लक्ष्य है । सद्ज्ञान का आलोक नासमझी के अंधकार को मिटाने का कार्य संपादित करे । हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं । दुनिया को पलटने का जो दावा हम करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं । आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए ।

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अधिक जानकारी के लिए पढ़ें : समाज निर्माण के कुछ शाश्वत सिद्धांत-४), बड़े आदमी नहीं, महामानव बनें-५), दो घिनौने-मुफ्तखोर, कामचोर-४)५०, मंदिर जन जागरण के केंद्र बनें-३), देव संस्कृति का मेरुदंड-वानप्रस्थ-३), वैभव नहीं, महानता वरण करें-४) ।

पुस्तक सूची के लिए निम्न पते पर लिखें ।

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३
फोन : (०५६५) ४०४०००, ४०४०१५

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org